प्रथम अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों की कथावस्तु का अनुशीलन -

प्रथम अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के ' चिन्हार ' और ' ललमनियाँ ' कहानी संग्रहों की कहानियों के कथा वस्तु का अनुशीलन

प्रस्तावना :-

आधुनिक कहानीकारों में प्रमुख रूप से उभरी महिला कहानीकार मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि एक ओर उनकी कहानियों में करूणा दिखाई देती है तो दुसरी ओर विद्रोह दिखाई देता हैं। कहीं उनकी कहानियों में आज की जिंदगी की दुहरी लाचारियों और द्वंद्व भरी मानसिकताओं की अभिव्यक्ति दिखाई देती है, तो कहीं उनकी कहानियाँ करूण और विद्रूपता की तीखी धारा से युक्त दिखाई देती हैं। इन्हीं प्राप्त सब विशेषताओं के कारण मैत्रेयी जी अपनी समकालीन कहानीकारों से कहीं अधिक ऊँचा स्थान प्राप्त कर चुकी है।उनके दो कहानी संग्रह -

1) ललमनियाँ

2) चिन्हार को हमने लघु-शोध-प्रबंध का विषय बनया है।

इन दोनों कहानी संग्रहों में कुल तेईस कहानियाँ हैं। वस्तुतत्व की दृष्टि से इनका अध्ययन एक-एक कहानी संग्रह को लेकर किया है। लेकिन इससे पहले यह जान लेना अत्यंत आवश्यक है कि कहानियों में वस्तुतत्व का क्या महत्व है ?

1.1 कहानियों में वस्तुतत्व का महत्व

कथा का मूलाधार कथावस्तु मानी जाती है। इसी के अंतर्गत कहानी के अन्य सभी तत्व समाये रहते हैं। इसी कारण इसका महत्व और भी अधिक बढ जाता है। अन्य सभी तत्व भी इसी एकमात्र तत्व पर अवलंबित रहते हैं इसी कारण कथावस्तु कहानी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

कहानी की कथावस्तु के बारे में यह कहा जाता है कि वह न तो अधिक छोटी हो या न अधिक बड़ी। इस कथावस्तु को एक ही बैठक में पढा जा सके। इसी कारण इसमें पात्रों की संख्या भी अधिक न हो। कथोपकथन या संवाद बहुत ही रोचक, चुटीले हो जिनके माध्यम से कथानक जल्द-से-जल्द अपने उद्देश्य तक पहुँचे। कहानियों में देशकाल तथा वातावरण का चित्रण उचित ढंग से किया जाए भाषा शैली का प्रयोग पात्रानुकूल,प्रसंगानुकूल और स्वाभाविक होना चाहिए। कथावस्तु का आरंभ आकर्षक होना चाहिए तभी जाकर वह कथावस्तु जल्द-से-जल्द चरनसीमा तक पहुँचकर अपने उद्देश्य तक पहुँच जाती है।

घटना-विन्यास की दृष्टि से कथावस्तु में अनेक विशेषताएँ होती है।कथावस्तु संक्षिप्त हो। उसमें मौलिकता हो। साथ ही रोचकता, क्रमबद्धता, प्रवाहमयीता, यथार्थ परकता, कौतुह आदि कई तथ्य कथावस्तु में समाविष्ट होने पर कहानी सफल बन सकती है। कथावस्तु के महत्व को डॉ. प्रतापनारायण टंडन जी ने इस प्रकार प्रस्तत किया है, 'कथावस्तु' का कहानी में एक मूल उपकरण के रूप में तो सर्वाधिक महत्व है ही, कहानी की रचना का आधार होने के कारण भी इसका विशिष्ट स्थान है। भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से कहानी के स्वरूप पर विचार करते हुए कथावस्तु को ही प्रधानता दी है। यों तो कहानी की रचना में उसकी संभावना नहीं होती। सामान्य रूप से कथावस्तु का अपेक्षित महत्व इस कथ्य से निर्धारित होता है कि उसमें वर्णित जीवन खंड़ का कहानीकार को कितना प्रखर अनुभव है।''[1] आरंभिक युग की हिंदी कहानी में कलात्मकता का अभाव होने का एक मुख्य कारण यह भी था कि उसकी कथावस्तु का क्षेत्र अत्यंत सीमित था। केवल मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी जानेवाली इन कहानियों में कथावस्तु का आधार केवल कल्पनाजन्य, चमत्कारिक घटनाएँ ही होती थी। उनमें कहानीकार की यथार्थ दृष्टि का समावेश नहीं होता था परंतु परिवर्तित कहानी में वैचारिक परिपक्वता आने का एक कारण कथावस्तु का क्षेत्रीय विस्तार भी हुआ है। अब कहानीकार अलौकिक, चमत्कारिक, काल्पनिक तथा

नाटकीय तत्वों की सहायता से अपनी कहानी की कथावस्तु का निर्माण नहीं करता वरन् ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, पौराणिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक विषयों का तात्विक आधार ग्रहण करके कथावस्तु का सूत्र-चयन करता है। हिंदी कहानी का विकास इस तथ्य का द्योतक है कि कहानी के स्वरूपगत परिष्कार का एक कारण कथावस्तु का क्षेत्रीय संतुलन भी है। इस दृष्टि से उसका क्षेत्रगत विस्तार भी कथावस्तु के ही महत्व का परिचायक कहा जा सकता है। अर्थात कहानी में कथावस्तु का महत्व अनन्य साधारण है।

मैत्रेयी पुष्पा अंतिम दशक की कहानीकार होने के कारण उनकी कहानियों में कहानी प्रकारों की विविधता के दर्शन होते हैं। अत: हम यहाँ पृष्ठभूमि के रूप में कहानी विकास के विविध पड़ाओं पर सोचेंगे-

नई कहानी

नई कहानी के बारे में श्री सुरेन्द्र कहते हैं, ''कहानी में से साफ- सुथरा वस्तु विन्यास, चरित्र-चित्रण, कथानक वगैरह यानी कहानीपन निकाल देने से ही कहानी अपना चोला बदलकर 'नई कहानी' बन जाती है''[2] नई कहानी स्वातंत्र्योत्तर जीवन की स्थितियों, प्रसगों एवं अंतरदंव्दों का बहु आयामी चित्रण प्रस्तुत करती है। नई कहानी के रचनाकार भोगे हुए अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हैं। नई कहानी में प्राचीन जीवन मूल्यों का अस्वीकार आज के सही संदर्भों की तलाश, व्यक्ति जीवन के अंत संघर्ष, बौध्दिकता और यथार्थ की तीव्रता जीवन के नूतन पक्ष, नूतन सत्य और नए तथ्य परिवर्तित भावबोध वस्तु और शिल्प में नवीनता, युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति, जनजीवन के साथ नये कट्टे आदि बहुविध तथ्य नई कहानी के माध्यम से उजागर होते हैं। आज नई कहानी विकासोन्मुखी बनकर नए-नए तथ्यों की तलाश करती है।

सचेतन कहानी

सचेतन कहानी सामाजिक, आर्थिक, व्यवस्था पर सीधा प्रहार करती है और मानव को सक्रिय, जागरूक बनाने के लिए तैयार करती है। सचेतन कहानी को यथार्थ वादी दृष्टि की सचेतना, सहजता,जीवंत प्रतिक्रिया,आदि रचनात्मक और वैचारिक विशेषताओं के रूप में अंकित किया है। सचेतन कहानी परंपरागत रूढिओं को नकारकर जीवन की सच्चाइयों को पहचानने की इमानदार कोशिश करती है । अत: यह कोई शिल्पगत आन्दोलन नहीं तो यह एक वैचारिक आन्दोलन है।

अकहानी

अकहानी पॅरिस में प्रचलित 'एव्टी स्टोरी' का भारतीय संस्करण घोषित किया है। इसमें फैंटेंसी, डायरी, मोनोलोग, संस्मरण, आत्मप्रलाप, आदि की विशेषताएँ अंकित हैं और इसमें अस्तित्ववादियों के निषधों को समाप्त कर यौन वर्णन के प्रति एक सहज दृष्टि का विकास दृष्टिगोचर होता है। मौन तटस्थ भाव, अस्वीकृति, अनास्था आदि लक्षण अकहानी में पाए जाते हैं।

समकालीन कहानी

सातवें दशक के बाद समकालीन कहानी आन्दोलन शुरू हुआ। समकालीन कहानी को स्पष्ट करते हुए डॉ. गंगाप्रसाद विमल कहते हैं, - ''समकालीन कहानी रचना की कोई नयी विधा नहीं है न ही नये लोगों का कोई रचनात्मक आन्दोलन इसे कहा जाना चाहिए, अपितु वे सब रचनाकार जो कम-से-कम रोमांटिक भाव बोध से तथा परम्परागत स्थिति से अलग हैं और कथा रचना में अपने समग्र नयेपन का आग्रह करते हैं - समकालीन रचना के रचनाकार हैं।''[3] अत: साठोत्तरी कहानी को अगर गंगा की तरह व्यापक धारा कहीं जाये तो समकालीन कहानी को उसमें मिल जानेवाली एक नाले की धारा ही कहना उचित होगा।

समांतर कहानी

सातवें दशक के अंत में समान्तर कहानी का जन्म हुआ, 'आम आदमी' को केंद्र में रखकर ही कहानियों का आरम्भ माना जाता है। आम आदमी की जिन्दगी गावों से लेकर बाजारों, कसबों, नगरों और महानगरों तक फैली समांतर कहानी में दृष्टिगोचर होती है। समांतर कहानी के दो पक्ष माने जाते हैं - 1) आम आदमी की सारी शक्तियों का लुप्त होने का स्वर। 2) आम आदमी के संघर्ष की अभिव्यक्ति।

जनवादी कहानी

जनवादी विचारधारा वामपंथियों से आयी है, इसे प्रगति का नया संस्करण माना जाता है, जनवादी कहानी आम आदमी के अधिकारों को हासिल करने के लिए की गयी एक तरफ जनसंघर्ष को चालना देती है, तो दूसरी तरफ शोषण मुक्ति को संकेतित करती है। मतलब शोषण करनेवालों के खिलाफ संघर्ष करने की चेतना को जागृत करती है।

सक्रिय कहानी

सक्रिय-कथा-आन्दोलन के प्रवर्तक राकेश वत्स के अनुसार - ''सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब है -आदमी की चेतनात्मक ऊर्जा और जीवंतता की कहानी''[4] सक्रिय कहानी आदमी को भविष्य के हकों के लिए मानसिक और व्यावहारिकता पर तैयार करना, दिशा बोध देना, जादा-से-जादा पाठकों तक पहुँचने की जरूरत महसूस करना, दानवी प्रवृत्तियों का विरोध करना, आदमी को शोषण मुक्त करने की भूमिका आदा करना आदि बहुविध तथ्य सक्रिय कहानी में उजागर होते हैं। किसी भी स्थिति में समर्पण की बात सक्रिय कहानी नहीं सोचती है। मैत्रेयी पुष्पा की अधिकतर कहानियाँ उपर्युक्त कहानी प्रकारों में आती हैं।

यहाँ हम मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' इन दो कहानी संग्रहों में संग्रहित कहानियों की कथावस्तु पर क्रमशः प्रकाशः डालेंगे -

1.2 ' चिन्हार ' कहानी संग्रह की कहानियों का परिचय

'चिन्हार ' (इ.स. 1991), मैत्रेयी पुष्पा के इस कहानी संग्रह में निम्मलिखित बारह कहानियाँ संग्रहित हैं

'अपना-अपना आकाश' कहानी में लेखिकाने महानगरीय जीवन के साथ-साथ विघटित परिवार पद्धति की संकल्पना, लोगों के मन में किस तरह से उभरती जा रही है, यह विशद करने का प्रयत्न किया है। मंझले बेटे और बहू के साथ बंगलोर रहनेवाली माँ आज दिल्ली के बडे बेटे और बहू के यहाँ जाने की तैयारी में है। इस तैयारी के दौरान मंझले बेटे की पत्नी कहती है, '' रेलगाडी का खाना अम्मा कैसे पचा पाएँगी, सो जो उन्हें पसन्द है वहीं बना दिया है, कम से कम खा-पीकर तो पहुँचेंगी उनके घर''।[5] जब वह दिल्ली बडे बेटे के घर पहुँची तो उन्हे वहाँ पर भी वहीं वातावरण अनुभव हुआ जो उन्हें मंझले बेटे के घर में दिखाई दिया।उनके बडे बेटे को उनके पास आने के लिए वक्त भी नही मिलता है। नौकरों के पास उन्हें खाना भिजवाया जाता है। हर व्यक्ति अपने में व्यस्त दिखाई देती है। माँ का चार-चार महीनों के लिए उनके बेटो ने बटवारा कर लिया है। एक दिन के लिए जादा ठहरने की चाह होने पर भी वह बेटे के घर में रह नहीं सकती, इन कटू स्मृतियों को माँ के मन से निकालने के लिए बडे बेटे द्वारा माँ को दिल्ली का कोना-कोना घुमाकर दिखाया जाता है। घुमते वक्त माँ उसे कहती है -

''कितनी कुतबमिनार हैं रे दिल्ली में ?''

'' माँ एक ही है।''

'' फिर जि कहा है ?''

''ये तो मकान है, होटल है।'' बेटे ने स्पष्ट किया ''[6] बाद में माँ अपने दूसरे बेटे के घर जाने की तैयारी करती है। उस वक्त उसके कानों पर कुछ ऐसे शब्द पडते है कि, उसे 'वृंदावन' अनाथाश्रम भेजने की तैयारी बेटे कर रहे है, लेकिन वह नजदिक होने के कारण

बंगलौर अनाथाश्रम को चुना जाता है। उस वक्त वह नौकर लल्लू को साथ लेकर अकेली घर छोडकर वापस अपने गाँव चली जाती है।

इस कहानी में महानगरीय पारिवारिक परिवेश की टूटन को दिखाकर ऐसे परिवारों मे बूढ़ों की स्थिति को कैसे बेहाल बनाया है, इस पर चिंतन किया है। आज महानगरींय मनुष्य आत्मकेंद्रित और अर्थ केंद्रित बनने के कारण अर्थ के सामने वह नाते-रिश्तों की खातिर नहीं करता है। जन्म देनेवाली माँ को अनाथाश्रम में रखने की सोचनेवाली इस परिवार के भाइयों पर लेखिका ने व्यंग्य किया है। इस कहानी को पढने पर हमें 'चीफ की दावत' कहानी की याद आती है। इस कहानी की बूढ़ी भी महानगरीय परिवेश में बेटे के परिवार में रहने की अपेक्षा काशी में रहकर बाकी जिंदगी के दिन बिताना चाहती है। आज की स्थिति में महानगरीय परिवारों में बढ़े-बूढ़ों के लिए कोई स्थान नहीं होता है, उनके पालन-पोषन के लिए भाई-भाइयों में उनका बटवारा किया जाता है, इसे स्पष्ट करके महानगरीय जीवन के परिवारों की टूटनशीलता पर यहाँ किया है।

'बेटी' कहानी में भारत की पुरूष प्रधान संस्कृति के परिणाम स्वरूप सारे अधिकार पुरूषों को प्राप्त हुए हैं। स्त्रियों को इसमें कोई भी स्थान नहीं रहा है। उनपर सिर्फ घर संभालने की जिम्मेदारी रहती है। नारियों के मन की कोई खातिर नहीं की जाती है।

कहानी की'वसुधा' का रोज स्कूल जाना, उसकी सहेली मुन्नी को पढने की इच्छा होते हुए भी उसके द्वारा उसे स्कूल नहीं भेजना, मुन्नी द्वारा पराँठे सेंकना, भाइयों को स्कूल भेजना, उनके कपडे धोना, पिता के साथ खेत में काम के लिए जाना, आदि काम उसकी माँ द्वारा उससे करवाना, उस पर मुन्नी का कहना, ''अम्मा, तुम मेरे साथ जो कर रही हो वह कुछ अच्छा नहीं कर रहीं। तुम पाँच-पाँच लडकों को पढ़ा सकती हो, लेकिन मेरे लिए तुम्हारे घर अकाल है ..... मेरी किताब-कापी के पैसे तुम्हें भारी है अम्मा।''[7]

यह कहने पर भी उसकी माँ पर कोई असर नहीं पडता है। वह कहती है कि लडके, ''रह गए थे..... यही उनका क्या, चैक है, कभी मुनालो..... अपनी मर्जी पर निर्भर है।''[8] माँ की यही धारणा पर उनके सारे बेटों ने पानी फेर दिया। शादी के बाद सारे लडके विभक्त रहने लगे। मुन्नी की शादी हो चुकी थी। इसी कारण अपनी घर-गृहस्थी से फुर्सत कहाँ होगी ऐसा उसकी माँ ने अपने मन में एक धारना कर ली थी, लेकिन उसने मुन्नी को चिठ्ठी लिखी है, माँ को मुन्नी के प्रति आशा का किरण दिखाई देता है।

मुन्नी को अपने माँ-बाप के प्रति अति लगाव होने के कारण वह अपनी बेटी को माँ के पास संभालने के लिए छोड़ जाती है। उसके मन की पढ़ने की अतृप्त चाह को वह अपने बेटी के माध्यम से पूरी करने की सोचती है। मुन्नी वसुधा से कहती है, ''वसुधा, तू भी तो यहीं रहकर पढ़ी थी, ऐसे ही वह भी पढ़ लेगी...''[9] अत: अपनी पढ़ने की आकांक्षा अपने बेटी में संजोये मुन्नी इस कहानी में अंकित है।

मैत्रेयी पुष्पा नारी-शिक्षा की पक्षधर होने के कारण मुन्नी की पढ़ाई में आनेवाले रोड़ों पर खेद प्रकट करती है। चाह होकर भी परिस्थिनुकून पढ़ न सकनेवाली औरतें अपने बेटे-बेटियों को पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में बढ़ावा देकर अपने अधूरे सपने को पूरा करती हैं। मुन्नी इस तथ्य का अच्छा उदाहरण हो सकती है। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी शिक्षा को प्रधानता देने का यहाँ प्रयत्न किया है।

'सहचर' एक प्रेम कहानी है। आदमी पर आनेवाली आपत्ति में उसका साथ निभाना अनिवार्य है। सभी आपत्तियों का सामना मिलकर करना चाहिए चाहे वह सुख में हो या दु:ख में हो लेकिन एक दूसरे के लिए बने ही रहना चाहिए। यहीं इस कहानी में बताने की कोशिश मैत्रेयी पुष्पा ने की है।

इस काहनी का नायक 'लखन' और नायिका अफसर की बेटी 'छवीली' है। छवीली का अपने चाचा-चाची के साथ रहना, उसके माता-पिता का गुजर जाना, उसकी मृत्यु में

रूचि होना, उनके यहाँ एक मास्टर जी का आना,उन्हें बंसी और लखन नाम के दो पुत्रों का होना, पढ़ा-लिखा होने के कारण बंसी की घर में प्रतिष्ठा होना, लखन का चाचा द्वारा सीधा सच्चा और सादा लडका होने के कारण छवीली की शादी लखन से करना, छवीली और लखन का एक-दूसरे के बिना न रहना, लखन के खेतों पर जाने के ऊपरांत उसके लिए कलेऊ बनाना, दोपहर को उसके लौटने पर उसे नहाने के लिए पानी देना, धुले कपडे देना, खाना परोसना, खाते समय सामने बैठी रहना, आदि से स्पष्ट होता है कि ये दोनों एक-दूसरे में कितने घुल-मिले है, इसका सबूत देखिए - '' लखन विभोर होकर नशे में डूबे हुए से कहते, '' विरमा ने हमारे लाने खूब सिरजीं तुम, नातर कैसे ज़िन्दगी कहती ? हम तो ठहरे ..... ''छवीली चुप कर देती, ऊँगली उनके होठ़ों पर धरकर और उनकी छाती से लग जाती।''[10]

इनका यह प्यार जादा दिन तक टिक नहीं पाया । एक दिन छवीली बहुत बीमार पड गयी डॉक्टर ने उसे 'गेंगरीन' लगी है ऐसा बताया। उसके बाद दादाजी उसे मायके छोड आए। उस समय लखन पागलों की तरह बर्ताव करने लगा। उस समय दादाजी ने उसकी दूसरी शादी करने का फैसला किया लेकिन ऐन शादी के वक्त वह बारात से भाग गया और बंसी को उस समय शादी करनी पड़ी। छवीली का पाँव बनवाने के लिए लखन पूना के लिए रवाना हो रहा है ऐसा दादाजी को बाद में पता चलता है।

इस कहानी में लखन-छविली का अनन्य साधारण प्रेम दिखाकर मैत्रेयी ने लखन की प्रेम-विषयक शुध्द अवधारणा को स्पष्ट किया है। आज समाज में हम देखते हैं कि पत्नी की बिमारी के कारण पत्नी से तलाक लेनेवालें, दूसरा विवाह रचानेवाले युवक भी हैं, परंतु लखन इसके लिए अपवाद लगता है। वह प्रेम में कर्तव्य निभाकर छवीली के प्रति अपने प्रेम का उत्तरदायित्व छोड़ता है। दादाजी के कहने में आकर दूसरा विवाह करने से इन्कार करता है।

'बहेलिये' कहानी के द्वारा गरीब लोक राजनीतिक भ्रष्टाचार में कैसे शिकार बन जाते हैं। साथ ही सच का झूठ़ और झूठ़ का सच कैसे किया करते है, गरीबों को अन्याय का सामना कैसे करना पडता है यह बताने कि कोशिश की है।

कहानी की नायिका 'गिरजा' का अपने पिता के उम्रवाले आदमी की दुल्हन बनकर 'सोनपुर' गाँव में आना, पति द्वारा उसके कच्चे उम्र का पूरा खयाल करना, पति की मौत के बाद उसके द्वारा माँ और अपने बहन का बेटा सूरज को अपने पास रहने को बुलाना, सूरज को उसके द्वारा दरोगा बनाना, गिरजा पर शिक्षा और जागरूकता का तथा स्त्रीशोषण के विरूध्द आवाज उठाने का प्रभाव रहना, इसी दौरान भोली नामक लडकी का साहुकार के लडके सुमेर की वासना का शिकार बनकर जल मरना, गिरजा और मास्टरजी द्वारा उसका पोस्टमार्टम करने की चाह प्रकट करना, लेकिन दरोगाजी द्वारा भोली ने आत्महत्या की है ऐसा रिपोर्ट लिखकर देना, गाँव के लोगों को न्याय दिलाने के लिए गिरजा द्वारा चुनाव लड़ना, चुनाव के दौरान गिरजा को गाँववालों ने दी हुई परेशानी देखिए - ''उनके आँगन में पत्थर बरसे, डरावनी धमकी मिलीं, टूटे काँच फें के गए। वे घायल हुई मगर पराजित नहीं ''॥

इस तरह से वे चुनाव जित गयी लेकिन गिरजा के साथ अन्याय के विरूध्द खडे मास्टर जी को विष देकर मारा जाता है और मौत का जिम्मेदार उसकी पत्नी सावित्री को माना जाता है। मास्टर जी की लाश का पोस्टमार्टन नहीं किया जाता उस समय वह दरोगा की तबदला करके अपने पुत्र सरोज को गाँव में लाना चाहती है ताकि रामराज्य निर्माण हो। गिरजा को सूरज का बर्ताव दरोगा जैसा ही दिखाई देता है। वह भ्रम निराश होकर वापस अपने गाँव लौट आती है, अकेले अन्याय के विरूध्द लड़ने के लिए।

इस कहानी में ग्रामीण जीवन में स्थित चुनाव नीति के परिणाम स्वरूप होनेवाली धांधलियाँ और पुलिस माहौल की भ्रष्टता पर लेखिका ने यथार्थ ढ़ंग से प्रकाश डाला है।

'मन नाँहि दस-बीस' यह एक प्रेम कहानी है। बचपन का प्यार जवानी तक आने से उसे किन-किन संकटों का सामना करना पडता है साथ ही संसार में जाति व्यवस्था के कारण प्रेमी किस तरह पीसे जाते हैं, इसका वर्णन यहाँ पर दिखाई देता है।

कहानी का नायक 'स्वराज' और नायिका 'चन्दना' को अपने पति और देवर को जहर पिलाने के जुर्म में आगरा जेल में दाखिल करना, कल्याणी देवी और उसके पिता द्वारा उसे जेल से छुड़ाना, स्वराज द्वारा उसे ढूँढ़ने पर भी उसका न मिलना, स्वराज का नियोजन अधिकारी बनकर काम के सिलसिले में 'वनगाँव' आना, उस समय उसे कल्याणी के घर में चंदना का मिलना, जिसे समाज द्वारा बहिष्कृत नारी मानना, ये सारे तथ्य प्रेम के रास्ते पर खडी रूकावटों के संकेत देते हैं।

चन्दना के पिता का रामपुर गाँव के गरीब बस्ती के एकमात्र साहुकार होना, बड़ी वर्षो के उपरान्त साहूकार के यहाँ चंदना नामक लडकी का जन्म लिया जाना, उस समय स्वराज का उनके यहाँ जाना, चंदना स्वराज का एक-दूसरे के साथ घुलमिल जाना, दोनों बड़े होने के बाद माता-पिता द्वारा स्वराज से मिलने के लिए उसे रोक लगाना, इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करती हुई चंदना का कहना - ''अम्मा क्या हो गया स्वराज को ? क्यों न रहूँ उसके साथ ? पहले वह अच्छा था अम्मा ? अब नहीं ? देखो अम्मा, तुम तो जानती हो मैं स्वराज के बिना..... न अम्मा, ऐसा न कहो.....। ''[12]

सारे गाँव में वह दोनों प्यार के नाम पर बदनाम होना, स्वराज का चन्दना के पिता के एहसान, अधिकार और गरीबी के लाचारी से पढ़ाई का कारण बताकर गाँव छोड़ना, उसे चन्दना की याद सताना, अपना मन पढ़ाई में लगाना, गाँव में लाला चन्दना की शादी चुपके से आगरा जाकर करना, चन्दना का स्वराज को पत्र लिखना और स्वराज पर रोश लगाना कि, बीच मझदार में अकेला छोड़कर चला गया है । एक बरस बाद चन्दना द्वारा दूसरा पत्र स्वराज को मिलना, चन्दना को मिलने वापस गाँव आना, दोनों का एक-दूसरे से मिलने के

बाद स्वराज का भेंट स्वरूप अपना लाकेट देना, उसके बाद स्वराज पढ़ने के लिए और चन्दना पति और देवर के साथ ससूराल चली जाती है।

चन्दना का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता उस रात उसका देवर उसके पीछे आ गया था। उस दिन से चन्दना की सास, पति, देवर उसका बहुत छल करते हैं। उसका देवर अय्याशी में रहना चाहता हैं। पति शराब पीता था फिर भी उसे वह समझकर लेता लेकिन पति के सूख से वंचित रखता। सास पोता न होने के कारण उसे कोसती रहती और स्वराज के नाम से गालियाँ देती। देवर की उसकी तरफ अच्छी नजर न होने के कारण उसे कोसती रहती और स्वराज के नाम से गालियाँ देती। देवर की उसकी तरफ अच्छी नजर न होने के कारण एक दिन अय्याश देवर को मारने के लिए उसने खाने में जहर मिलाया देवर ने खाना खाया और पति बाहर गाँव से भूख के मारे उन्होंने भी उसी थाली में खाना परोसने को कहा उसने चंदना की एक न सूनी। चंदना के आँखों के सामने दोनों मर गए। उसने अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया। बिना किसी को टोके उसने अपना अपराध स्वीकार किया। सजा होने के बाद स्वराज ने उसे बहुत मिलने की कोशिश की लेकिन वह उसे मिली नहीं। इन सारी बातों से चंदना ने स्वराज को अनजान रखा इत्तफाक से इन दोनों का आज मिलन हो गया। तब स्वराज चन्दना से माफी माँगता है। चन्दना कहती है, ''क्षमा किस लिए, स्वराज ! वह तो हमारी अपनी-अपनी जंग थी..... जो तुम्हारी थी, तुमने लडी और जो मेरे हिस्से आई, उसे मुझे ही तो लड़ना था, स्वराज ! घायल कौन कितना हुआ, जंग में इसका हिसाब होता ही कहाँ है।''

अब सारे युद्ध समाप्त हो गए चन्दना ''[13] इस काहनी में प्रेम बिखराव से बिगड़ी मानसिकता का नतीजा क्या होता है, इस पर चिंतन किया गया है।

'हवा बदल चुकी है ' यह एक राजनीतिक स्तर पर आधारित कहानी है। आज दुनिया में भ्रष्टाचार बढ़ चुका है। चुनाव में नेता लालच दिखाकर वोट खिंचने का काम कर

रहे हैं। मत पेटियाँ बदली जा रही है। सत्य के पक्षधरों को हटाकर वहाँ पर भ्रष्टाचार का राज्य लाया जा रहा है। कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है।

इस कहानी का नायक 'सुजान ठाकुर' है। गांधीवादी सुजान, बापूजी के सपनों को साकार करने में लगा रहता है। उसने पराधिन भारत को देखा था जहाँ पर गांधीजी का भाषण होता, वह गाँववालों को लेकर वहाँ पहुँच जाता। वह अनपढ़ ग्रामीण लोगों को 'स्वराज' शब्द का अर्थ बतलाता स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद उसने प्रतिभोजन कर डाला। उसने हिंदु-मुस्लिम दोनों को एक करने का प्रयत्न किया, उस समय की स्थिति इस समय की परिवर्तित स्थिति के बारे में कहा जाता है कि, ''दिन गुजरते रहे - प्रकाश फैलता रहा। हमारे उस छोटे से पुरता का नाम जगमगाने लगा और साथ ही ख्याति के पुंज से चमकने लगे सुजान। ''[14]

सुजान की चुनाव में जीत होने के उपरांत उसने गाँव में बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध करा दी, लेकिन जब वह चुनाव हार गए तो सारी परिस्थिति ही बदल गयी, ''सुजान के हटते ही गाँव का कार्य-तंत्र बदल गया। घूसखोरी और भ्रष्टाचार ने जन्म ले लिया। चोरी, राहजनी और कत्ल की वारदांते होने लगीं। मुकदमों में दलाली का धंधा जोर पकड गया। सब हो रहा था..... सुजान के सामने ''[15] उस समय हाथ में कुछ भी न होने के कारण सुजान चुप बैठे रहे। गरीब लोगों के सामने पैसे का लालच दिखाया गया साथ ही चुनाव बक्सों को बदलने की फिर से कोशिश की गयी उस समय सुजान की पत्नी उसके भतीजे की मदद लेने को कहती है, जो चुनाव अधिकारी है। उस समय सुजान कहते हैं, ''जान-पहचान, नाते-रिश्तेदारी के बलपर मैं तो करा लाऊँगा अपना काम, मगर जिनका कोई नहीं वह..... सरकारी चौखट पर भूखा बैठूँगा। या तो चुनाव केंद्र बदला जायेगा या फिर मेरे प्राण.....''[16]

इस प्रकार से सुजान अपनी जंग खुद लढना चाहते है और जनता को सही न्याय देने का प्रयास करते हैं।

प्रस्तुत कहानी में गांधीवादी सुजान की हार भ्रष्टाचारी नीति के परिणाम स्वरूप होती है। आज गांव के जीवन से गांधीवादी सत्य-अहिंसा गायब हो चुकी है, सर्वत्र दलबंदी हो रही है, ग्रामीण अंचल तक शहरों की अनाटकी छा गयी है, परिणाम स्वरूप गांधीवादी तत्वों पर अनाटकी पूर्ण तत्वों का हावी हो जाना आज सर्वत्र दिखाई दे रहा है। सुजान अस्तित्व बोध से परिपूर्ण व्यक्ति है, वह गांधीवादी नजरिये से ग्रामीणों की ओर देखना चाहता है। मैत्रेयी पुष्पा की अनेक कहानियों में गांधीवादी तत्वों का पुनर्जीवन देखने को मिलता है। सन् 1965 के बाद गांधीवादी तत्व साहित्य से गायब होने लगे जिससे मानव जीवन में हिंस्त्रता का निर्माण हुआ। आज गांधीवाद की आवश्यकता लेखिका महसूस करती है इसलिए उन्होंने सुजान को गांधीवादी बनकर अवैध शक्तियों के साथ संघर्ष करने को प्रस्तुत किया है।

'आक्षेप' कहानी में एक नारी-चरित्र पर आक्षेप लिया हुआ दिखायी देता है। नारी की तरफ समाज की देखने की कुदृष्टि को यहाँ लेखिकाने अंकित करने का प्रयत्न किया है।

'मिस्टर विशालनाथ' पर गाँव की सेवा करने और वहाँ जीवन बिताने का जुनून सवार हुआ, इस वजह से उन्होंने 'रूकमपुर' जाने का इरादा कर लिया, वहाँ जाकर वह 'रमिया' नामक नारी के घर में रहने लगा, रमिया बाबूजी का खाना बनाना, कपडे धूना, आदि सारा काम करती रहती है। विशालनाथ का शहर से लौट आने पर रमिया का घर पर न होना, बहन 'द्रौपदी' द्वारा उनका खाना परोसना, विशालनाथ द्वारा रमिया की पूछताछ करने पर द्रौपदी द्वारा कहना, ''आपको नहीं मिली बाबूजी ? सहर ही तो गयी है यसोधन मास्टर के संगै।''[17] विशालनाथ को रमिया का अन्य पुरूषों के साथ घर के बाहर जाना अच्छा न लगना, विशालनाथ द्वारा ऐसी बदनाम औरत के घर रहने का पश्चात्ताप होना, विशालनाथ द्वारा रमिया को सारीरात कहाँ थी, उसकी पूछताछ करना, रमिया द्वारा काऊ के घर रहने का उत्तर देना, भट्टीन की बीमारी का कारण बता देना, रमिया सेवाभावी औरत होने के

कारण हर जगह जाती है। इसके बाद शेरखा के साथ चली गयी बाजार हाट करने फिर वह चम्पाराम पंडित के साथ चली गयी। कुछ दिनों के बाद वह लछमीनारायन के साथ चली गयी। वह हर किसी के साथ मदत करने के बहाने जाया करती। बाबूजी ने उसे समझाया, एक दिन नम्बरदार के घर जाने पर बाबूजी ने सवाल पूछा 'कहाँ गयी थी ?' उस समय विशाल ने घर छोड़कर जाने की बात की थी। रमिया ने जवाब दिया कि, "बाबूजी जानें चाहों तो बेसक चले जाओ। हम तो आपकों बदनामी ही दे सकता। पर बाबूजी, जाअें हमाओं दोस नइयाँ, सब हमारी माँ को दोस है।" बई ने हमाये मन में परमारथ कूट-कूट के भर दओ और बाइ अपसरा-सी सुगठ़ माँ कौ रूप दै दओ हमें राम जी ने "[18] उस पश्चात रमिया ने न जाने की कस्म खाली लेकिन एक दिन बाबूजी को बताकर बीमार बच्चे को देखने के लिए चली गयी।

इस कहानी में मैत्रेयी ने सेवाभावी प्रवृत्ति की औरतों की ओर सारा समाज आक्षेप भरी नजर से कैसे देखता है, इसका पर्दाफाश किया है। घर से बाहर समाज में जानेवाली नारी का संबंध जिससे आता है वह पुरूष उस पर अधिकार जताना चाहता है। वास्तव में वह नारी उसे चाहे न चाहे इस कहानी का विशालनाथ एक ऐसा ही पात्र है जो इसी कसौटी पर पूरा उतरता है। उसको रमिया का अन्य पुरूषों के साथ जाकर मिलना जुलना उचित नहीं लगता है। वह उसकी सेवाभावी प्रवृत्ति पर आंच लाने का प्रयत्न करता है। परंतु वह नारी ऐसी है जिन्होंने सेवाभावी प्रवृत्ति को अपने जीवन का सर्वस्व माना है।

'कृतज्ञ' कहानी के 'अनुपम' और 'वसुधा' पति-पत्नी हरिशंकर चाचा के पड़ोस में रहते हैं, हरिशंकर और उनकी पत्नी के साथ वे इतने घुलमिलकर रहते हैं कि सगे रिश्तों से भी उन दोनों परिवारों मे एक अलग नया रिश्ता बन जाता है। परंतु वसुधा और अनुपम में शहरी आत्मकेंद्रितता होने के कारण तबादले के बाद वे हरिशंकर को भूल जाते हैं परंतु बाद में हरिशंकर का प्रेम उनपर इतना हावी होता है कि वे अपनी भूल फिर सुधारकर हरिशंकर के परिवार से रिश्ता जोडना चाहता है।

प्रस्तुत कहानी में 'वसुधा' और 'अनुपम' पति-पत्नी हरीशंकर (चाचा) उनकी पत्नी (चाची) के परिवार के पड़ोस में रहते हैं। वसुधा को चाची अपनी बेटी, बहु समझती थी। इसी कारण चाची ने बिट्टू के वक्त वसुधा का बहुत खयाल किया था। अनुपम और हरीशंकर दोनों अलग-अलग रहकर भी दोनों एक ही घर में रहते हैं, ऐसा लगता था ताकि दोनों में अत्यंत नजदीक का रिश्ता उत्पन्न हुआ था। जब अनुपम का तबादला दिल्ली होता है उस समय हरिशंकर के परिवार को दिल्ली आने के लिए कहकर दोनों दिल्ली रवाना होते हैं। जाते वक्त वसुधा मीरा से कहती है, ''पगली रोती हो ! तुम आना वहाँ। मैं तुम्हारे भाई साहब को भेजूँगी तुम्हें लेने। फिर देखना-चिडिया घर, लालकिला, कुतुबमीनार। अब हँस दो..... चली।''[19] हरीशंकर की बीमार पर उनका बेटा बड़ी आशाएँ लेकर अनुपम के यहाँ दिल्ली जाता परंतु वहाँ अनुपम के बेरूखेपन को देखकर उसकी आशाएँ चूर-चूर हो जाती है। अंतिम सास के वक्त हरीशंकर अनुपम को बुलाते है लेकिन वह अस्पताल में जादा वक्त नहीं ठ़हरता। हरीशंकर मर जाते हैं, अनुपम को हरीश के प्रति आत्मीयता है लेकिन वह कुछ कर नहीं पाता।

कुछ दिनों के पश्चात अनुपम की आर्थिक आवश्यकता में हरिश उसकी मदद करता है। इस पर अनुपम हरीशंकर के ऋणी मानकर बाद में उनके बेटे हरीश के अहसानों तले दब जाते हैं, फिर भी हरीशंकर चाचा के घर से उन्हें प्रेम, आदर ही मिलता है। अनुपम को अपनी भूल का पश्चात्ताप होता है। इस तरह से दो अलग-अलग परिवारों को एक करने का प्रयास लेखिकाने किया है।

प्रस्तुत काहनी में मैत्रेयी पुष्पा ने महानगरीय जीवन की रिश्तों में स्थित आत्मकेंद्रितता को उजागर किया है। हरिशंकर द्वारा अनुपम को बेटे सदृश्य प्रेम देने पर भी अनुपम तबादला होने के पश्चात उन्हे भूल जाता है और हरिशंकर के ऋण को भूलता है परंतु जब अनुपम स्वयं आर्थिक कठ़िनाई में आता है, तब हरिशंकर का बेटा उनकी सहायता करके अपने

पिताजी के तत्व को पुष्ठि देकर उदारता से अनुपम की सहायता करता है। लेखिका यहाँ यह बताना चाहती है कि प्रेम देनेवाला प्रेम उदारता से देता है, लेनेवाला इसे लेने में कंजूसी करता है फिर भी अंत में इस कंजूसी का उसे पश्चात्ताप होता है। अनुपम इसका अच्छा उदाहरण है। लेखिका यहाँ केशवसुत की भाषा में बताना चाहती है कि प्रेम के लेन-देन से प्रेम बढ़ता है। प्रेम की लेन देन से मानवी रिश्तों में दृढ़ता आती है, इस पर यहाँ मैत्रेयी ने जोर दिया है।

'भँवर' कहानी में पुरूष प्रधान संस्कृति के साथ पुरूष का असली-नकली चेहरा बताने की कोशिश लेखिकाने की है। साथ ही एक स्त्री को बच्चा न होने पर उसे किन-किन अत्याचारों का सामना करना पडता है यह बताने का प्रयास यहाँ किया है।

इस कहानी में 'केशव' और 'विरमा' दोनों पति-पत्नी है। विरमा का बच्चा मरने के उपरांत उसे पाँच साल तक बच्चा न होना, केशव द्वारा 'सुमन' से दूसरी शादी करना, विरमा का पति को कोर्ट में खिंचने के लिए और अपना हिस्सा माँगने के लिए अपने भाई के साथ आना, सुमन द्वारा अपना बच्चा उसके गोद में देना, बच्चे को देखकर विरमा का सबकुछ भूल जाना, बच्चे में अपनी सारी ममता वह न्योछावर कर देती है। जैसे - '' पर हुआ क्या ..... सम्मोहन में थिर गई, ममता के हाथों बिक गई-सारा दिन नन्हें के पोतडे धोने और तेल मालिश में लगा रहती। रात को दूध-पानी, घुट्टी-काजल की फ़िकर में जागती रहती।अपने प्रति अन्याय की बात तो भूल बिसर गई।''[20]

बच्चा जब सौतेली माँ और अपनी माँ के बीच फर्क नहीं करता है, यह बात जब सुमन समजने लगी उस समय घरका काम विरमा के हाथ सौंपा गया, अब सिर्फ विरमा बच्चों की निहारती रहती है। केशव विरमा के प्रति आसक्त नहीं है। एक दिन स्कूटर से टकराने की बजह से अनजाने लोग उसे हॉस्पीटल में अॅड़मीट करते हैं। दो दिन के बाद भाई और पति आते हैं। पति उसकी रोज आकर सेवा करते हैं। स्कूटरवाला पैसे देकर पुलिस का मामला

आपस में मिटाने की विनती करने पर केशव तैयार होता है और उसका असली चेहरा सामने आता है। पैसे लेकर केशव चला जाता है और विरमा अस्पताल में प्रतिक्षा करती रहती है, जैसे -''अस्पताल के गलियारों में साँझ से सवेरा..... सेवेरे से साँझ होती रही।'' प्लास्टर ठकी देह की दो आँखे प्रतीक्षा में पथरा गयीं, मगर.....।''[1] अत: हमें इस बात का पता चलता है कि, जब एक नारी को बच्चा न होने पर समाज में उसे कैसा निम्न दर्जा मिलता है। उसे अपने ही घर में बेगानापन मिलता है। उसके जिंदगी की कीमत की जाती है और उसे निसहारा छोड़ा जाता है।

प्रस्तुत कहानी में पति की आत्मकेंद्रितता, पति का खंड़ित व्यक्तित्व, विरमा के प्रति उपेक्षितता के दर्शन होते हैं। विरमा नारी संवेदना से ओतप्रोत लगती है। अपनी सौत का छोटा बच्चा जब उसे दिया जाता है तब वह सारी दुश्मनी भूलकर उस बच्चे पर अपना वात्सल्य उंड़ेलती है। नारी संतान की भूखी होती है , इसे विरमा के माध्यम से लेखिकाने दिखाया है। नारी संतान के बगैर अपने को परिपूर्ण नारी नहीं मानती है, इस पर भी यहाँ प्रकाश पड़ता है।

'सफर के बीच' कहानी में व्यक्ति को अपने जीवन के सफर में किन-किन प्रसंगों का सामना करना पडता है यहीं बताने का प्रयास किया है। साथ ही भ्रष्टाचार की दलदल में न चाहकर वह घसीटा जाता है और आखिर उसका स्फोट दिखाई देता है।

कहानी का नायक 'गिरराज' गरीबी की हालत में भी शहर में पढ़ाई करता है, बीच मंझदार में माँ सबको अकेला छोडकर गुजर जाती है, उसकी प्रेमिका हेमन्ती पिता के तबादला के कारण शहर छोड़कर चली जाती है। इन दो जख्मों को मिटाने के प्रयास में वह अपने आपको पढ़ाई और टयुशन में डूबो देता है। एक दिन वह आई.ए.एस. अफसर बन जाता है। भाभी की प्रताडना से वह बिरजू और सरोज को बचाता है। आज वह हेमन्ती के

लायक बन चुका है, लेकिन हेमन्ती उसका नाम जपते-जपते मर चुकी थी। अपने पारिवारिक दायित्वों की दहलीज पर वह दम तोडता है और सुमन से शादी करता है।

सभी को लगता है कि गिरराज के पास पैसा और सत्ता है। बडाभाई रघु, फूफी और गाँव के अन्य लोक गिरराज का नाम बताकर अपना काम करते हैं और गिरराज अनायास ही भ्रष्टाचार करता है। उस समय उसे माँ और हेमन्ती की याद आती है। वह अपनी नजरों में गीर जाता है। आखिर में रघु छोटे लडके की सर्व्हिस के लिए 20,000/- रु. मांगता है तो वह उसे घर से निकल जाने को कहता है।

इस काहनी में अमीरी-गरीबी के बीच दोलायमान प्रेम संबंधों को दिखाकर लेखिका यह बताना चाहती है कि अमीर लडकी भले गरीब लडके से प्रेम करें फिर भी समाज इनके प्रेम-विवाह को मान्यता नहीं देता है। अमीर हेमंती का गरीब गिरीराज को चाहने पर भी उसके परिवारवाले दोनों के प्रेम में दीवार बनकर खडे रहते है। परिणामत: हेमंती को असफल प्रेम से निराश होकर खुदकुशी करनी पड़ती है। गरीब गिरीराज मेहनत के बल पर आई.ए.एस.अफसर बनकर हेमंती से विवाह करने योग्य बन जाता है परंतु इसके पहले ही हेमंती इस दुनिया को छोड़ चली जाती है। निराश गिरिराज सुमन से न चाहने पर भी विवाह करता है। असफल प्रेम की घुटन यहाँ मैत्रेयी ने दिखायी है।

'केतकी' कहानी द्वारा दिखाया है कि समाज में प्रतिष्ठा का मुखवटा बनाये रखनेवाले लोग नारियों पर अत्याचार करते जा रहे हैं। उनके अत्याचारों का मुहतोड़ जवाब देने के लिए एक नारी खडी हो जाती है। वह नारी इस कहानी की नायिका केतकी है। 'श्री गोपाल' को 'श्रीकान्त' और 'मणि' नामके दो बेटे हैं।'केतकी' का ब्याह श्रीकान्त के साथ हुआ है। श्रीकान्त अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है और इस कारण छ: महीने के बाद वापस आने का वादा देकर वह गुरूकुल जाता है। श्री गोपाल का मित्र गन्धर्वसिंह गाँव का पंच है। गन्धर्वसिंह की केतकी पर बुरी नजर होना,श्री गोपाल का श्रीकान्त से मिलने गुरूकुल

जाना, गन्धर्वसिंह द्वारा केतकी पर जबरदस्ती करना, मणि द्वारा देखने पर उसे धमका देना। केतकी द्वारा अपने पेट में पलनेवाले नाजायज बच्चे को गन्धर्वसिंह का है, ऐसा कहने पर गंधर्वसिंह के बेटे गजराज का उस पर बरस उठ़ना, इस पर केतकी का कहना, "सारे गाँव की जनता का तुमचे मुँह बन्द कर रखा है। पैसे के जोर पर तानाशाही चला रहे हैं।"[22] यहाँ केतकी की नारी चेतना पर प्रकाश पड़ता है।

केतकी उसका नाम लेकर चुप नहीं बैठी तो उसने उस गांव में पुलिस बुलवाई है। आज तक उस गाँव में पुलिस नहीं आयी थी, लेकिन केतकी को न्याय देने के लिए उसका बचपन का मित्र पुलिस इन्स्पेक्टर चंदन वहाँ पर आ जाता है। उसके छोटे देवर मणि ने उसकी गुंगा होकर भी साहयता की है। जब श्रीकान्त गाँव में आता है तो वह पत्नी और अपने घर को त्याग कर चला जाता है। श्री गोपाल सारी जायदाद केतकी के नाम कर अपने पुत्र मणि की जिम्मेदारी उसपर डालते हैं। केतकी को जब बच्चा हो जाता है उस वक्त मणि अपनी हथेली पर 'सत्यव्रत' नाम लिखकर भाभी को दिखाता है।

इस कहानी में सबलों द्वारा, गुंडों द्वारा, गाँव की औरतों की अस्मत लूटना, उनके गर्भवती होनेपर उनके विवाह अन्य युवकों से लगा देना,अपनी अवैध संतान को उन युवकों के माथे पर मढ़ाना गाँव में अपनी पोल न खुलने के लिए पुलिसों को गाँव में न आने देना आदि प्रवृत्तियाँ गंधर्वसिंह में दिखाकर लेखिका ने गांव के जीवन में स्त्रियों की असुरक्षितता पर प्रकाश डाला है। इस अन्याय और अत्याचार के प्रति आज गाँव की औरतें चित्रित होने लगी है। इसका उदाहरण 'केतकी' में देखने को मिलता है। केतकी गुंडा गंधर्वसेन के खिलाफ आवाज उठाकर पुलिस में प्रविष्ठ होकर गंधर्वसेन को गिरफ्तार करवाती है। यहाँ नारी चेतना, नारी विद्रोह आदि के दर्शन कराकर मैत्रेयी पुष्पा ने केतकी के माध्यम से नारी जगत को संकेत दिये हैं।

'चिन्हार' कहानी के द्वारा नारी के उदार, महान, रूप का वर्णन किया है। कहानी की नायिका 'सरजू' एक प्रेममयी निष्ठावती नारी के रूप में सामने आती है। सरजू के गर्भवती

हालत में उसके पति चन्द्रप्रकाश की मृत्यु होती है। पति मौत के पश्चात उसकी ननद विद्या और भाई उसे अपने साथ लेकर गाँव छोड़कर चले जाते हैं। सरजू की पुत्री कनक को विद्या ने अपनी पुत्री मानकर माँ की ममता दी। दिल्ली में सरजू सिर्फ अपनी 'कनक' के लिए अपने सारे रिश्ते भूलकर भाई के घर में नौकरानी बनकर रहती है। कनक की बढ़ती उम्र के साथ उसकी शादी होती है। शादी के समय सरजू अकेले घर में बैठी है। कनक बिदाई के अक्सर पर घर जाने की जिद करती है। घर जाने के बाद वह सरजू के कमरे की तरफ जाती हुअी कहती है, ''माँ.....ऽ.....ऽ..... आँ.....आँ.....ऽ.....ऽ.....आँ दहली .....ऽ.....ई.....ऽ पुजवाओ..... माँ, माँ.....ऽ.....ऽ..... आँ !'' वह कहती हुई सरजू से लिपट गयी। जितनी रो सकती थी रोयी कनक माँ के कन्धे पर सिर रखकर। ''[23] आश्चर्य से सरजू कनक को देखती रही और सोचती रही कि, ''क्या.....ऽ..... ?'' यह लड़की जानती है ? एक टक घूरती रही सरजू। कनक रोती रही माँ की छाती से लगी।''[24] अत: सरजू ने कनक को कभी भी माँ होने के एहसास नहीं लगने दिया फिर भी कनक ने यह बात जान ली है ऐसा दृष्टिगोचर होता है।

इस कहानी में फिल्मी करण के दर्शन होते हैं। अपने पति की मृत्यु के बाद सरजू कनक को जन्म देकर उसके लालन-पालन के लिए अपना घर छोड़ भाई के घर आकर रहती है। वह खुद को भाई के घर की नौकरानी बनकर कनक के साथ में अपना असली मातृत्व छिपाती है परंतु कनक के विवाह के अवसर पर यह राज खुल जाता है और माँ-बेटी का मिलन होता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने संतान के रास्तों को प्रशस्त करने के लिए माँ क्या-क्या नहीं करती इसपर सरजू के माध्यम से प्रकाश डाला है।

निष्कर्ष : 'चिन्हार' कहानी संग्रह में हमने कुल बारह कहानियों का अनुशीलन करके यह सिध्द कर दिया है कि इन कहानी संग्रहों की कहानियों में विषय वैविध्य हैं। आलोच्य कहानियों के विषय नारी मानसिकता की और नारी आत्मीयता की तलाश करनेवाले हैं।

इसमें नारी की प्रेमी के प्रति श्रध्दा, नारी का पति-प्रेम, नारी का संतान प्रेम, नारी का आडोस-पडोस में रहनेवालों से प्रेम, नारी का मातृत्व प्रेम, आदि विविध विषयों पर मैत्रेयी ने लेखनी उठाकर नारी जीवन की स्थिति और गति पर प्रकाश डाला है।

इसमें ग्रामीण जीवन पर आधारित, महानगरीय जीवन पर आधारित कहानियों के माध्यम से आलोच्य परिवेश की मानसिकता को खोलकर पाठकों के सामने रखा है। इस संग्रह की कहानियाँ विद्रोही,परंपरायुक्त, परंपरा की पक्षधर, अमीर, गरीब आदि स्तरों की हैं। इन विविध सामाजिक स्तरों में से गुजरनेवाली नारियाँ इन विभिन्न परिवेशों से उपजी प्रवृत्तियों की वाहक लगती हैं। नारी विमर्श की दृष्टि से विवेच्य कहानियाँ सफल हैं।

1.3 ' ललमनियाँ ' कहानी संग्रह की कहानियों का परिचय

मैत्रेयी पुष्पा के दूसरे कहानी संग्रह ललमनियाँ (इ.स.१९९६) में कुल दस कहानियाँ संकलित है इनमें से **'फैसला'** कहानी की कथावस्तु ग्रामांचल की वर्तमान समस्या को लेकर उभरी है। कहानी के प्रमुख पात्र ब्लाक प्रमुख 'रनवीर' और उसकी पत्नी 'बसुमती' है। अपने पति रणवीर की चुनाव में हार की खबर बसुमती मास्साब से चिठ्ठी लिखकर बता देती है।

'एक व्यक्ति एक पद' के मुताबिक दो पदोंपर एक साथ न बने रह सकने की मजबूरी से सत्तालोलुप ब्लाक प्रमुख रनवीर अपनी पत्नी बसुमती को ग्राम प्रधान बनाता है। बसुमती सामाजिक न्याय की पक्षधर बनकर सरकारी योजनाओं का लाभ दीनदलितों तक पहुँचाने का संकल्प करती है किन्तु रनवीर उसके संकल्प और उमगों को तथाकथित परम्पराओं और मर्यादाओं की आड में कुचलकर रख देता है। रनवीर कहता है कि,

''हरदेई नामक विवाहित लडकी जिसका स्वयं का बाप उसे जबरदस्ती अपने घर में रखकर उसके बल पर पैसा कमाना चाहता है। उस अधर्मी पिता के सिंकजे से हरदेई को बचाने के लिए बसुमती हरदेई के पक्ष में फैसला करती है लेकिन बसुमती के फैसले को गाव

की छल-छदमकारी राजनीति नाकाम बना देती है। इससे उदविग्न हुई बसुमती ब्लाक प्रमुख के अगले चुनाव में अपना ओट पति रनवीर को नहीं देती जिसके कारण केवल एक मात्र ओट से रनवीर चुनाव हार जाता है।

प्रस्तुत काहनी में मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव में स्थित राजनीतिक भ्रष्टाचार, भ्रष्टशासन व्यवस्था, पुलिस की मिलीभगत, गाँव की गुंडई आदि के खिलाफ आवाज उठानेवाली बसुमति को केंद्र में रखकर मैत्रेयीने आज के नारी की अन्याय-अत्याचार का विरोध करनेवाली प्रवृत्ति को उभारने का प्रयत्न किया है।

'सिस्टर' इस कहानी के माध्यम से व्यक्ति का अकेलापन दिखाया है और खोकले रिश्तों का पर्दाफाश किया है। डोरोथी डिसूजा का अस्पताल में नर्स होना। पिताजी के मौत के उपरान्त उसका अकेली बडी मकान में रहना। सुरेशचन्द को रोज इंजेक्शन लगाने के लिए उसका उनके घर हररोज जाना। डिसूजा द्वारा सुरेशचन्द की मौत से बचाना। इसपर सुरेशचंद्र का कहना -

''हाँ डोरोथी बहन, तुम मेरी बहन बनाकर भेजी हो भगवान ने कोई बहन नहीं थी न।''[25]

तब से डिसूजा का उस घर की एक सदस्य बनना, सुरेशचन्द के बेटे सुरेश की शादी के वक्त डिसूजा का कीमती तोफा लेकर जाता, आरती उतारने की रस्म को पड़ोसी से सिखकर जाना, आरती उतारते वक्त सुरेश की बुआ सावित्री का आना, डिसूजा द्वारा यह दृश्य देखती रहना और अवसर देखकर वहाँ से अपने घर चली आना, घर में आकर दु:खी डिसूजा द्वारा सफेद ऐप्रिन पहनकर अपना बैग सँभालती रिक्शे से डयूटी के लिए निकल चल पडना आदि घटनाएँ डौरोथी डिसूजा की स्थिति पर प्रकाश डालती है।

प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने रिश्तों में स्थित आत्मकेंद्रितता को उजागर किया है, व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ता जोड़ता है और जब अपना काम हो जाता है तो उस रिश्तें

को कीमत नहीं देता है। सुरेशचन्द ने बीमारी के वक्त डोरोथी डिसूजा को बहन मान लिया लेकिन बिमारी से निपटने के उपरांत बेटे की शादी में उसकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया। स्वार्थी व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। अत: लेखिकाने यहाँ खोखले रिश्तों का पर्दा फाश किया है। खून के रिश्तो में जो खींचाव होता हैं, वह खोखले रिश्तों में नहीं यह इस कहानी के माध्यम से लेखिकाने स्पष्ट किया है और इस कहानी में धर्मनिरपेक्षिता की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

'सेंध' कहानी में जमीदारों की जमीनें सरकार कानून के द्वारा उनसे छीनती है और इसके मुआवजे में दूसरी जमीनें देती है। उस हानि के वजह से अमीर लोग गरीब होते हैं, इसका वर्णन यहाँ देखने को मिलता है।

इस कहानी में गंगासिंह नामक एक जमीदार है। वह बैहरी के पूछनेपर मजदूरों के बीच उसके आगमन की व्यथा को प्रस्तुत करते हुए कहता है - ''फिर क्या ? जो तुम्हें नहीं मालूम?''चकबन्दी में चले गये वे खेत।उनके बदले मिले ऊसर,बंजर,सफेद रेट्ट भरे खेत ! सोडा मिली मट्टी की धरती।''[26]

गंगासिंह जिस खेती पर दो वक्त की रोटी खाते थे वह जमीन हाथ से चली जाने पर कुछ काम नहीं कर पाते की , बाप दादा की इज्जत काम करने पर मिठ्ठी में मिल जायेगी इस आशंका से वे अपना सब कुछ खोते हैं। घर निलामी का समय आनेपर वे रातोरात गाँव छोड़कर आते हैं और शहर में पेट भरने के लिए मजदूर बन जाते है। अंत में उपहासात्मक भाव से बौहरी को अपने ऊपर कृपादृष्टि रखने के लिए कहकर हाथ जोड़ते हैं।

प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने सरकारी चकबन्दी के नियम के कारण जमीदारों को किन-किन हालातों का सामना करना पड़ता है यह बताने का प्रयास किया है। चकबन्दी नियम के नियमों ने लोगों को अमीर से गरीब बनाया है। इस कहानी का गंगासिंह एक

जमीदार होकर भी आज वह शहर में एक मजदूर बना हुआ दिखाई देता है। अत: सरकारी भ्रष्टव्यवस्था को भी उजागर किया है, जो लालच लेकर लोगों का काम करती है।

'अब फूल नहीं खिलते.....' इस कहानी के माध्यम से अपने अधिकार के बल पर जो पुरूष स्त्रियोंपर अत्याचार करते हैं उनके खिलाफ खड़े रहना चाहिए यह बताया है।

झरना का कॉलेज में पढ़ती रहना, अपने क्लास में उसका अकेली लड़की होना, लड़कों द्वारा उसे तंग करने पर भी उसकी छेड कभी नहीं निकालना। एक दिन झरना की कापी पर अश्लील चित्र लडकों द्वारा खिंचना। प्रिंन्सिपल राघव और शिवनाथ द्वारा उसके सहपाठीयों की पीटाई करना, झरना द्वारा गुप्ता सर पर शक करना। लेकिन उसका कुछ फायदा नहीं होना।

कॉलेज की छुट्टी समाप्ति के चार दिन पहले झरना को एक खत मिलता है कि, कॉलेज शुरू हुआ है। वह कॉलेज में आती है उस समय प्रिंसिपल उसकी इज्जत लुटने की कोशिश करते हैं। श्रीष अर्जी लिखने पर जोर देता है। लेकिन न्याय मिलने की कोई आशा नही होती अब कॉलेज शुरू हुआ और प्रार्थना हुई उस समय एक ही नारी स्वर जोर से चिखा

''प्रिंसिपल को बाहर करो..... राक्षस को निकाल दो.....छात्रों को न्यास.....।''

एक स्वर..... दूसरा, फिर तीसरा और फिर सारे छात्र - एकही आवाज एकही गाँव विद्यालय की इमारत उस अनुगूँज में समा गयी।''[27]

इस तरह से सभी की अन्याय के प्रति आवाज उठाई दिखाई देती है। प्रस्तुत कहानी में लेखिकाने नारी पर हुए अत्याचार के प्रति आवाज उठाने का प्रयास किया है, जैसे इस कहानी का प्रिंसिपल झरना पर जबरदस्ती करने की कोशिश करता है तो झरना इस अत्याचार के विरूध्द आवाज उठाती है और न्याय माँगने की कोशिश करती है। जो हमें आज के स्थित समाज व्यवस्था में देखने को मिलता है, अगर व्यक्ति अपने अधिकारों का अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करे तो उस पर पाबन्दी लगानी चाहिए यही संकते मैत्रेयी पुष्पा ने दिया है।

'रिजक' इस कहानी के द्वारा व्यक्ति को अपनी जिवीका चलाने के लिए कौन से भी काम में कमी नहीं माननी चाहिए यह बताने का प्रयास किया है।

इस कहानी में लल्लन की माँ दाई का काम करती है। वह लल्लन को भी दाई का काम कैसे करना है, यह बताती है। लल्लन दाई बनने में कामयाब हो जाती है फिर भी वह शहर में जाकर नर्स का कोर्स करके वापस गाँव में दाई का काम करती है। अब वह गाँव की डॉक्टरही बन गयी है। वह सबको सूचना देती रहती है और लोग उसका अमल भी करते है। बिरादरी के लोगों की बातें सुनकर लल्लन दाई का काम सिर्फ अपनी जाति की प्रतिष्ठा के लिए बंद करती है। उस वक्त मास्टरजी की बेटी और उसका होनेवाला बच्चा दोनों मर जाते हैं। इसकी जिम्मेदार मास्टर जी की बीबी लल्लन को ठहराती है। उस समय गांव में माते की बहु का प्रसुती का रूदन लल्लन सुनती है और भागती भागती वहाँ जाकर वह जैसी अपना दाई का काम अदा करती है।

प्रस्तुत कहानी में लल्लन के माध्यम से समाज में स्थित निकृष्ठ विचारों का पर्दा फाश किया है, आज नारी घर से बाहर निकलकर स्वावलंबी बन चुकी है, लेकिन समाज के लोग उसे बिरादरी की प्रतिष्ठा का कारण बताकर उसे रोकना चाहते हैं, लेकिन वह सारे समाज व्यवस्था का विरोध कर घर की दीवारों से बाहर निकलकर अपना अभिमान संभाले दृष्टिगोचर होती है, इस कहानी लल्लन इसका अच्छा उदाहरण है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी के माध्यम से नारी की स्वावलंबन की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

'बोझ' इस कहानी के माध्यम से मैत्रेयेने मध्यम वर्गीयों के जीवन की पोल खोलने का प्रयत्न किया है। पैसों के पीछे पडे माता-पिता का ध्यान अपने बच्चों पर न होने के कारण बच्चों की हानेवाली दुरवस्था पर यहाँ मैत्रेयीने चिंतन किया है।

कहानी में अक्षय नामक एक छोटा लडका अपने माता-पिता का राजा बेटा है। अक्षय को कपडे गीली करने की बुरी आदत है। वह क्रेश स्कूल में पढता है। माता-पिता के साथ

स्कूटर पर बैठकर सुबह सात बजे क्रैश जाता है। रात के आठ बजे उसके माता-पिता घर आते हैं। अक्षय पर माता-पिता के संस्कार नहीं है। इसी वजह से वह बाहर के लोगों को देखता है और उसका अनुकरण करता है। उसी कारण उसे बुरी आदतें लगी है। क्रैश से बार-बार शिकायतें आ रही हैं। इसी कारण पिताजी उसे मारते हैं और क्रैश का खर्चा मँहगा होने से क्रैश बदलने का निर्णय लेते हैं। कुछ दिन बुआ उसकी देखभाल करती है। जब अक्षय का भाई घर में आता है तो वह बहुत चिड-चीड़ा होता है। उसकी मानसिकतापर और भी बोझ पडता है।

प्रस्तुत कहानी में महानगरीय जीवन में स्थित पति-पत्नी जब नौकरी के लिएघर से बाहर निकलते है और रात को घर में प्रवेश करते है उस वजह से बच्चों पर कोई संस्कार नहीं लगा पाते, बच्चे बाहर के बच्चों का अनुकरण करते है और अपने आप को माता-पिता पर बोझ समझकर बुरी आदतों का शिकार होते हुए दृष्टिगोचर होते है, इस कहानी का अक्षय इसका उदाहरणहै। अत: मैत्रेयी पुष्पा अक्षय के माध्यम से यह संकेत करती है कि गरीबी के कारण माता-पिता नोकरी के सिलसिले में घर से बाहर रहकर, अपने बच्चों को पुरा प्यार न देने से बच्चों पर उसका बुरा असर पडता है और वह प्यार की तलाश में बाहर भटकते हैं और बुरी आदतों का शिकार बनते हैं।

'पगला गयी है भागवती' इस कहानी के द्वारा लेखिकाने यह बताने का प्रयास किया है कि, समाज में अगर लडकी ने गलती की तो उसे माफ नहीं किया जाता और वहीं गलती अगर बेटे ने की तो उसे अनदेखा किया जाता है, इतना ही नहीं तो उसका स्वागत भी किया जाता है।

कहानी में जिज्जी और भागो दोनों बहने हैं। भागो विधवा होने के कारण अपनी बहन जिज्जी के घर में रह रही है। जिज्जी को छह लडकें और एक लडकी हैं। लडकी का नाम अनुसुइया है। जिज्जी के लडके नरेश ने अपनी पसंद की लडकी से कोर्ट में रजिस्टर शादी

की है। बाद में नरेश के पिता ठाकुरसाहब उसकी पाँच गावों को दावत देकर उसकी फिर से शादी कर रहे हैं। उस समय भागो को अनुसुइया की याद आती है। जब ठाकुर और जिज्जी नरेश को आशीर्वाद देने स्टेज पर जाते हैं उस वक्त भागो ठाकुर को पत्थर मारती है और कहती है कि,

'मास्टर आन-बिरादरी हातो सो का ? भलो मानस हतो। और जा बहू.... जाकी तुम आरती उतार रहे..... जा कौन सी असल ठाकुर की जाई है, जातैं हिन्दू तक नइया ! और चार महीना गरभ..... !' माधों फिर, आज दै दै बेटा कों जहर..... जैसी मेरी अनुसुइया कों.....!!! ''[28]

उस समय जिज्जी कहती है कि भागो पागल हो गयी है। इस कहानी में नारी-पुरूष में जो भेद किया जाता है उसे अंकित किया है। पुरूषों की तुलना में नारी को जो निम्नस्तर का स्थान दिया जाता है उस पर लेखिकाने संकेते किया है। कोई भी गलती अगर लडका करता है तो घर के सदस्य उसे कुछ भी नहीं बोलते उल्टा उसका सहर्ष स्वागत करते हैं और वही गलती अगर लडकी करती है तो उसे अपनी जिंदगी खोनी पडती है या घर से संबंध तोडना पडता है। ऐसे निम्म प्रति के विचार की ओर संकेत करने का प्रयास लेखिकाने किया है,जो हमें इस कहानी में अनुसुइया में दिखाई देता है।

'छाँह' इस कहानी के माध्यम से अकेले आदमी के मन की व्यथा को दिखाने का प्रयास किया है।

इस कहानी के 'ददुआ' नामक वृध्द जामींदार अपनी बेटी रेशम के मर जाने पर इतने दु:खी हुए हैं, जितने अपने पत्नी के मर जाने पर भी नहीं हुए थे। रेशम के वेदू नामक दो साल के बेटा की माँ के बिना हुई हालत ददुआ से देखी नहीं जाती इसलिए वे उसे अपने साथ ले आते हैं। ददुआ के दो बेटे शहर में रहते हैं वे अपने बाप के बुढ़ापे पर ध्यान नहीं देते उल्टा वेदु को लाने पर ददुआँ को डाँटते हैं और जमीन के बटवारे की बात करते हैं। ददुआ को पोते

की परवरिश की परेशानी है। वेदू 'बेवा' को अपनी माँ समझता है। यह देखकर ददुआ खुश हो जाते है और वकील से लिखवाते है

"मैं विश्वनाथ प्रसाद वल्द सालिगराम, अपनी सही मानसिक स्थिति में, पूरे होशो-हवास में अपने हिस्से की धरती की वारिस बतासो बेगम बेवा सन्नू खाँ को करार.....।"[29]

आज ददुआ गाँव में आराम से घुमते हैं। उन्हें कोई परेशानी नहीं। उनके मन में जो महाभारत मचा था उसे विराम मिल चुका है। यहाँ बुढ़े लोगों की मानसिकता पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने खून के रिश्तों का बनावटीपन दिखाने का प्रयास किया है। आज के जीवन में लोगों के अर्थ केंद्रित बनने के कारण अर्थ के सामने वह नाते-रिश्तों की खातिर नहीं करते, अपने जन्म देनेवाले पिता को अकेला रहने पर मजबूर करते हैं और उनसे उल्टा जमीन जायदाद में हिस्सा मांगने के लिए झगडा करते हुअे दृष्टिगोचर होते हैं। 'ददुआ' के बेटों के माध्यम से इस स्थिति को स्पष्ट कर दिया है।

'तुम किसकी हो बिन्नी ?' इस कहानी के द्वारा लेखिकाने 'घर की वंश-बेली बढ़ाने के लिए लडका चाहिए' इस गलत धारणा को लेकर व्यक्ति किस हद तक गिर जाता है यहीं बताने का प्रयास किया है।

माँ-बाप के होते हुए प्यार के लिए तरसी बिन्नी का वर्णन यहाँ पर किया है। बिन्नी को अंजू और गुडिया नामक दो बडी बहने हैं। बिन्नी जब माँ के पेट में थी उस समय डॉक्टर ने लडका होने का निदान किया था लेकिन लडकी बिन्नी का जन्म होता है। लडकी होने के कारण बिन्नी को माँ ने छुआ तक नहीं बल्कि बिन्नी 'दादी माँ' और नौकरानी 'महेरी' के द्वारा ही बड़ी हो गयी। वह छोटी होकर भी घर का सारा काम करती थी ताकि अपनी माँ से प्यार के दो शब्द सुनने को मिले लेकिन ऐसा कभी भी नहीं हुआ। माँ उसे पिटती उस वक्त वह डॉक्टर को चिठ्ठी लिखती और उसका गोला करके फेंक देती। एक दिन वह चिठ्ठी उसके बहन के हाथ लगी उसमे उन्होंने लिखा था -

''अंकल जब आप बिन्नी को जानते ही नहीं थे तो फिर कैसे बता दिया कि बिन्नी नहीं होगी, अंजू गुडिया को भय्या होगा। मम्मी से क्यों झूठ बोला आपने ? मेरी मम्मी..... ?''[30]

बिन्नी का दु:ख असहनीय हो जाने पर पिताजी उसे दादी के साथ गाँव भेजते हैं। कुछ दिनों बाद पिताजी बिन्नी को लेने वापस गाँव जाते हैं क्यों कि बिन्नी की माँ को आठवाँ महीना चल रहा है और उसकी दोनों बहने माँ से नफरत करने लगी है वह दोनों उसकी दुश्मन सी बन गयी है। लेकिन दादी साफ इन्कार कर देती है।

प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने घर की वंश बेली चलाने के लिए समाज को लडका चाहिए लडकी नहीं इस परंपरा को अंकित किया है, यह परंपरा हमें आज भी देखने को मिलती है।

'ललमनियाँ' इस कहानी के माध्यम से लेखिकाने पुरानी संस्कृति, लोकनृत्य को आज भी पूजने वाले लोगों को दिखाया है। साथ ही उन लोगों की देखने की दृष्टि पर लक्ष केंद्रित किया है।

इस कहानी की नायिका 'मौहरो' ललमनियाँ का नाच दिखाती है। मौहरो को 'पिडकुल' नामक लडकी है। उसकी माँ ने जोग-तप माना था ललमनियाँ को जो अब मर चुकी है। वह ललमनियाँ नाच का गीत गाती थी -

''देख ललमनियाँ
पीरी पाग वारे तू देख ललमनियाँ
नैनन सुरमा वारे तू देख
ओ माया के लोभी, ओ जोरू के चाकर,
बेटा के व्यापारी,
तू देख ललमनियाँ ''[31]

अमीर बाप के लडके जोगेश के साथ मौहरे की शादी होती है। उसके माता-पिता मौहरे की स्वीकारते नहीं। मौहरे को वह कुछ दिन अपने साथ रखता है और नौकरी लगने के बाद वापस लाने का वादा देकर उसे गाँव वापस छोड़ आता है। मौहरी अपना और अपनी बच्ची का पेट भरने के लिए फिर से नाच करती है और एक दिन वह अपने पति जोगेश के शादी में नाच करने जाती है। उस समय वह वहाँ पर बहुत नाच करती है अदिम नाच करती है।

प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने पुरानी संस्कृति को जपनेवाले लोगों की परिवर्तित समाज व्यवस्था में क्या स्थिति होती है उसे दिखाने का प्रयास किया है। आज समाज आधुनिकता की ओर अग्रेसर हो रहा है और पुरानी संस्कृति सभ्यता को भूलकर नये पन को अपना रहा है, इसी कारण पुरानी संस्कृति, खंडित हो रही है, यहाँ नयी संस्कृति पुरानी संस्कृति पर हावी हो रही है, यही दृष्टिगोचार होता है। साथ ही अमीर घर के लडके गरीब घर के लड़कियों से शादी के बंधन में फँसते हैं और जब माता-पिता उनके रिश्तों को मंजूर नहीं करते उस समय उन लड़कियों का इस्तिमाल करके उन्हें वापस अपने मायके भेज देत है और दूसरी शादी करते हैं। अमीर घर के लडके गरीब घर की सुंदर लड़कियों को किस तरह फँसाते हैं इसका मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी में अंकन किया है, जो हमें आज की महानगरीय जीवन में देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकतें हैं कि, मैत्रेयी पुष्पा आधुनिक काल की एक ऐसी कहानी लेखिका हैं, जिनकी कहानियों ने आधुनिक कहानी जगत में धूम मचा दी है। मैत्रेयी पुष्पा अपनी कहानियों में आज के जीवन की सच्चाई का पूरा-पूरा साक्षात्कार कराना चाहती है। इनकी कहानियों में कहीं जमींदार-साहूकारों के शोषण विरूध्द विद्रोह दिखाई देता है, तो कहीं भ्रष्टाचार, पारिवारिक जीवन आदि दिखाई देता है। उन्होंने अपनी सारी

कहानियों में अपने अनुभवों को सोच विचार के साथ व्यक्त किया है इसी कारण उनकी कहानियाँ व्यक्तिगत जीवन से परे नहीं लगती। उन्होंने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग के जीवन की वास्तविकता को भी अंकित किया है। मैत्रेयी पुष्पा एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में हमारे सामने आ जाती है। इन दो कहानी संग्रहों की कहानियों में अनेक जगहों पर हमें साम्य दिखाई देता है तो कहीं वैषम्य के स्थल दृष्टिगोचर होते हैं। अपना अपना आकाश, सिटर, ललमनियाँ में नारी अस्मिता को दिखाया है।मन नाँहि दस-बीस, सहचर, सफर के बीच, कहानी में प्रेम का पवित्र पक्ष अंकित है। चिन्हार, ललमनियाँ कहानी में नारी के बलिदान के रूप को अंकित किया है। भँवर कहानी में मातृत्व के लिए तरसी नारी चित्रित की है। माँ का प्यार पाने के लिए तरसी 'तुम किसकी हो बिन्नी' कहानी की नायिका सामने आती है। मातृत्व का कर्तव्य पूरा करनेवाली 'बेटी' कहानी अंकित है। 'बोझ' कहानी में बदलता परिवेश दृष्टिगोचर होता है। 'पगला गयी है भागवती', 'सेंध', 'रिजक', 'फैसला', 'केतकी', 'बहेलिये', 'हवा बदल चुकी है' कहानियाँ भ्रष्टाचार का विरोध करनेवाली कहानियाँ है। 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी में नारी का स्वतंत्र अस्तित्व अंकित है। नारी शिक्षा की चेतना, आधुनिक बोध में नारी सोच की नयी दिशा, दाम्पत्य जीवन के संबंध, प्रेमविवाह के सुखान्त और दुखान्त दोनों परिणाम, राजनीतिक प्रदूषण भारतीय जीवन की रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, नेताओं के दुराचरण आदि विषय मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों में उजागर होते हैं। लेखिका के दो कहानी संग्रहों की नारियाँ समय बोध, अस्मिता बोध, अस्तित्व बोध, युग-बोध कराने में सक्षम है। राजनीति में नारी आरक्षण की परिणति हमें फैसला कहानी के माध्यम से देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ – सूची

1. प्रताप नारायण टंडन - हिंदी कहानी कला - पृ. 288
2. श्री सुरेन्द्र - नई कहानी दशा-दिशा सम्भावना - पृ. 11
3. वत्स, जितेंद्र - साठोत्तरी हिंदी कहानी और राजनीतिक चेतना - पृ. 73
4. डॉ. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी युगबोध का संदभृ - पृ. 80
5. मैत्रेयी पुष्पा - 'चिन्हार' - पृ. 10
6. वही पृ. 16
7. वही पृ. 21
8. वही पृ. 21
9. वही पृ. 23
10. वही पृ.. 29
11. वही पृ.. 42
12. वही पृ. 55
13. वही पृ. 65
14. वही पृ. 67
15. वही पृ. 68
16. वही पृ. 72
17. वही पृ. 76
18. वही पृ. 80
19. वही पृ. 93
20. वही पृ. 104

21. वही पृ. 109
22. वही पृ. 132
23. वही पृ. 141
24. वही पृ. 141
25. मैत्रेयी पुष्पा - 'ललमनियाँ' - पृ. 13
26. वही पृ. 25
27. वही पृ. 37
28. वही पृ.64
29. वही पृ.104
30. वही पृ.118
31. वही पृ.131
32. वही पृ.144